Random Rhymes

HARISINGH GOUR

RANDOM RHYMES

BY

HARI SINGH GOUR

Edited by
Laxmi Pandey

Warning
No part of this book may be reproduced or utilized in any form or by any means electronic or mechanical including photo-copying, recording or any information or storage and retrieval system without the written permission of the publisher and Editor.

© Publisher

First Anuugya Edition 2024

ISBN 978-81-19878-61-1

Published by
Anuugya Books
1/10206, Lane No. 1E, West Gorakh Park, Shahdara, Delhi-110032
e-mail: anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
Ph. : 7291920186, 9350809192 • www.anuugyabooks.com

Cover Design
Asrar Ahmed

Printed in
Arpit Printographers

RANDOM RHYMES (Poetry) *by* ***Dr. Harisingh Gour***
edited by ***Dr. Laxmi Pandey***

पूर्व संस्करण से

पूर्व संस्करण से

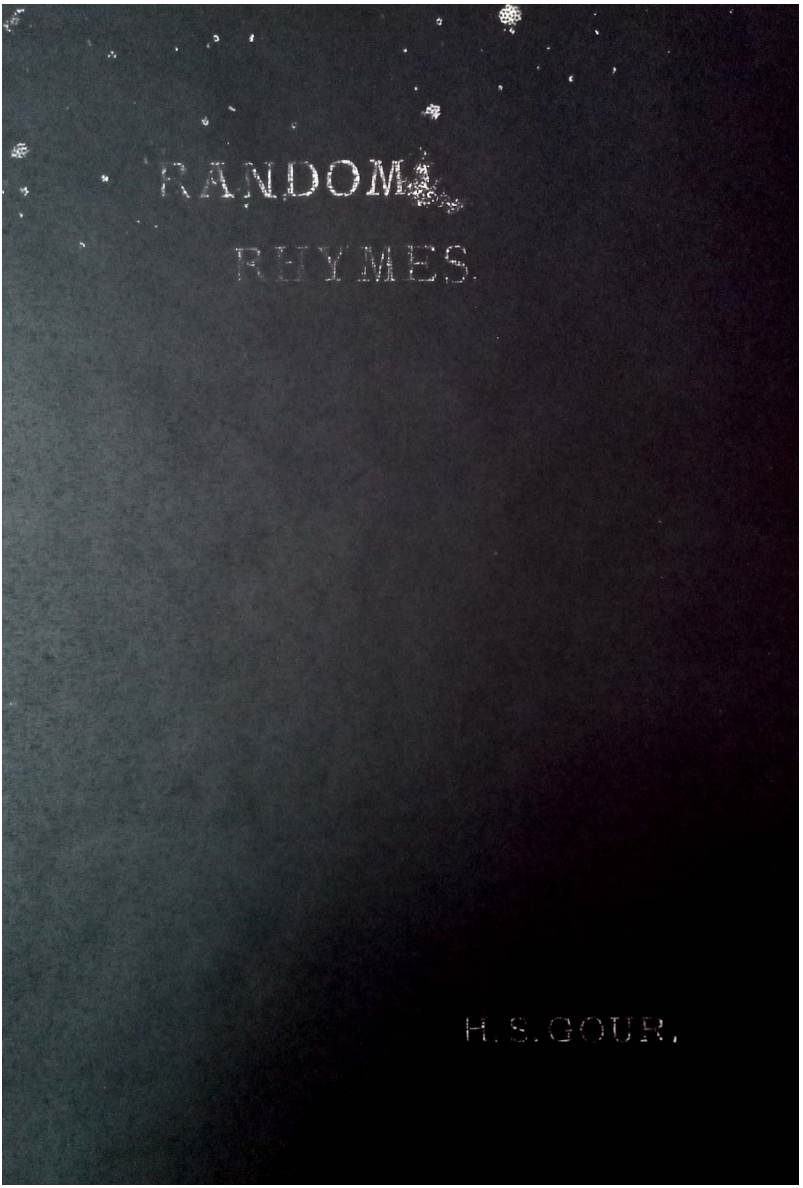

पूर्व संस्करण से

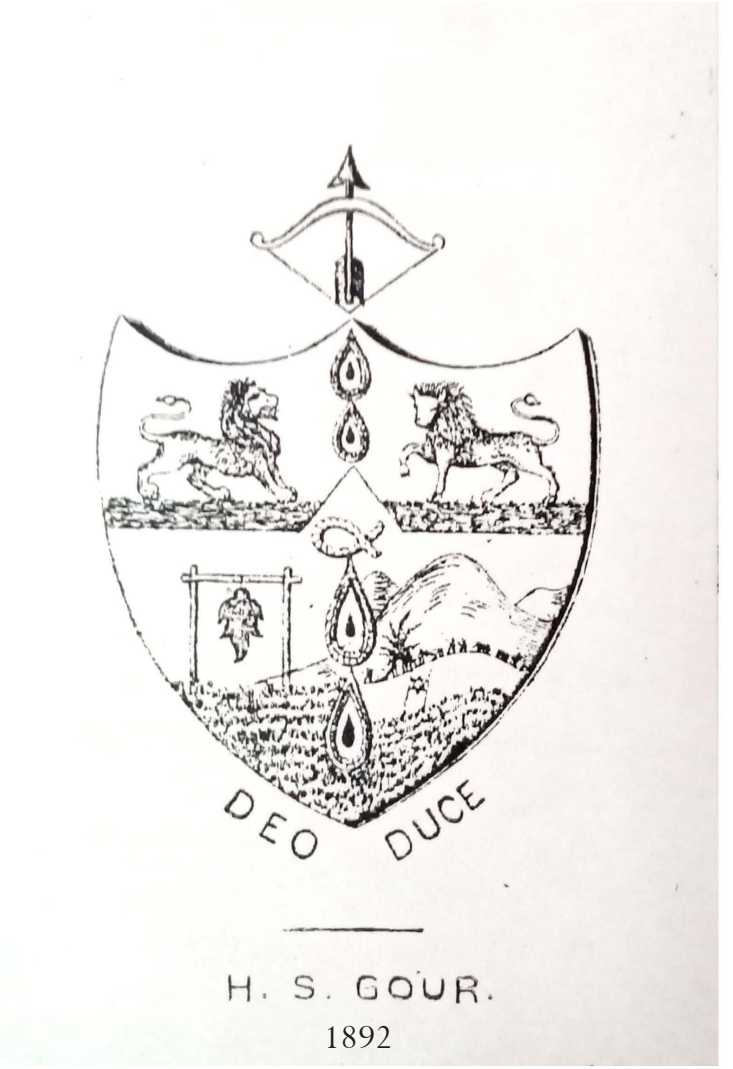

पूर्व संस्करण से

Printed at the Kaiyumi Press, Raipur

दायित्वपूर्ति का प्रयास

डॉ. हरीसिंह गौर के इस काव्य संग्रह Random Rhymes का प्रकाशन 1892 में हुआ था। अब 2023 (जुलाई) में यानी एक सौ इकतीस (131 वर्ष) वर्ष बाद इसका नया संस्करण प्रकाशित हो रहा है। इस समय मन कच्चा-कच्चा सा होकर भावुक हो रहा है और एक दायित्व की पूर्ति कर सकी, जैसा अनुभव मुझे रोमांचित भी कर रहा है। कुलपिता डॉ. गौर साहब जहाँ भी हों उनकी आत्मा सुखी हो, वे आश्वस्त हों ईश्वर से यही प्रार्थना करती हूँ।

साहित्यकार के लिए उसकी हर पुस्तक उसकी संतान की तरह होती है। अपनी संतान को जीवित, सुरक्षित देखकर उसे आत्मसंतोष की अपार अनुभूति होती है। देह नश्वर है, लेकिन आत्मा अजर-अमर होती है। इसलिए देह बदल भी गई हो तो भी गौर साहब की आत्मा इस सुख की अनुभूति अवश्य कर लेगी।

'सागर विश्वविद्यालय' की स्थापना 1946 में 18 जुलाई को हुई थी। इसके संस्थापक कुलपति डॉ. हरीसिंह गौर ने निजी धनराशि 2 करोड़ रुपयों का दान कर इस विश्वविद्यालय को स्थापित किया और दानवीर कहलाए। वे नहीं चाहते थे कि इस विश्वविद्यालय का नाम कभी बदला जाए किन्तु 1949 में गौर साहब के देहावसान के अनेक वर्षों बाद राजनैतिक दुराग्रहों के चलते इसका नाम डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय कर दिया गया। 2009 से पूर्व यह प्रादेशिक विश्वविद्यालय था उसके बाद यह केन्द्र सरकार के अधीन हो गया।

इस विश्वविद्यालय में 'जवाहर लाल नेहरू पुस्तकालय' है जिसमें एक कक्ष 'गौर कक्ष' के नाम से जाना जाता है। इसमें गौर साहब का निजी पुस्तकालय है तथा उनका सम्पूर्ण साहित्य भी सुसज्जित एवं सुरक्षित है। विश्वविद्यालय के लम्बे-चौड़े परिसर में यह पुस्तकालय गौर साहब के प्रिय स्थलों में से एक है। मुझे इस विश्वविद्यालय से जुड़े हुए 31 वर्ष हो गए। कई बार 'गौर कक्ष' में गई लेकिन बहुत खोजने और पूछताछ करने पर भी

Random Rhymes तथा उनकी अन्य पुस्तकों की भी मूल प्रति या पांडुलिपि नहीं पा सकी। मूल पुस्तक की फोटो कॉपी कर, उसे बाइंड करवा कर रखी गई कुछ प्रतियाँ ही देखने को मिलीं। जिनके पन्ने भी अब जर्जर हो चले हैं। एक Commemoration Volume 25 दिसम्बर 1957 को प्रकाशित किया गया था, वह भी अब जर्जर हो चुका है। मन यह सोचकर बेचैन और उदास हो जाता है कि अगर यह फोटो कॉपी वाली प्रतियाँ भी फट जाएँ या खो जाएँ तो क्या इस महान शिक्षाविद, न्यायविद, कानूनविद, दार्शनिक, दानवीर, संवेदनशील मनुष्य और साहित्यकार का यह साहित्य खो जाएगा क्योंकि इस पुस्तकालय में यह जैसा और जिस रूप में है, बस यही है और कहीं नहीं, जबकि गौर साहब दिल्ली और नागपुर विश्वविद्यालयों के भी कुलपति रहे हैं।

यह तो निश्चित है कि जब तक यह पृथ्वी है, संसार है, जीवन है, हमारा भारत अमर रहेगा। भारत में बुंदेलखंड और उसमें स्थित यह शहर सागर भी अमर रहेगा। पीढ़ियाँ आएँगी, पढ़ेंगी और जाएँगी, पुरानी इमारतों की जगह नयी इमारतें बनेंगी लेकिन इन भौतिक परिवर्तनों के साथ डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय अमर रहेगा। तब, उनका साहित्य भी उनके नाम के साथ सुरक्षित होना चाहिए युगों तक इसे भी अमर होना चाहिए। अनेक निद्राहीन और बेचैन रातों के चिंतन-मनन के बाद यह निर्णय ले लिया कि अब और किसी से आशा-अपेक्षा और प्रतीक्षा नहीं... मैं स्वयं इसे पुनर्प्रकाशित कराऊँगी। कानून की पुस्तकों की चिन्ता नहीं क्योंकि उनके अनेक संस्करण कानूनविदों द्वारा लाए जा चुके हैं। वे पुस्तकें उनके लिए मील का पत्थर हैं और हर क्षण उनका पथ-प्रशस्त करती हैं। केवल साहित्य समाज और दर्शन की पुस्तकों की चिन्ता है।

सामान्य जन हों या साहित्यकार उनकी धन-धरती की विरासत को सम्हालने वाले बहुत होते हैं किन्तु साहित्यकार की वास्तविक विरासत उसके साहित्य को सम्हालने का कार्य या तो उनके आत्मज करते हैं या मानस संतानें या कोई संस्था...। आत्मजों ने तो अब तक कुछ किया नहीं। संस्था यानी विश्वविद्यालय ने भी अब तक इसे फोटो कॉपी के रूप में ही सम्हाला है। वर्तमान में संस्थापक कुलपति डॉ. हरीसिंह गौर की प्रतिनिधि के रूप में प्रो.

नीलिमा गुप्ता कुलपति के पद पर विराजमान हैं। वे अत्यन्त विदुषी, पारखी दृष्टि सम्पन्न, परिश्रमी, धैर्यवान, सत्य निष्ठावान, श्रेष्ठ संवेदनशील मनुष्य और प्रशासक हैं। उन्होंने गौर साहित्य के प्रकाशन के सम्बन्ध में उत्साह प्रकट किया है लेकिन इस पद की अपनी व्यस्तताएँ हैं। क्या पता कब हो, हो कि न हो, अब और प्रतीक्षा नहीं। जीवन अगर नश्वर है तो मेरे जीवन का भी क्या भरोसा है। मैं भी तो गौर साहब की मानस संतान हूँ यह दायित्व मेरा भी है। फिर इस विश्वविद्यालय में अध्यापक होने के नाते इस संस्था की एक सदस्य हूँ तो संस्था की ओर से सौंपा गया अनकहा अघोषित दायित्व भी मान लूँ। यह सोचकर सर्वप्रथम Random Rhymes का यह संस्करण प्रकाशित करवा दिया। चूँकि मैं हिन्दी भाषा और साहित्य की अध्यापक हूँ। स्कूल में अंग्रेजी एक विषय के रूप में पढ़ी और अब तक कुछ स्वाध्याय के चलते अंग्रेजी पढ़ने और समझने में बहुत अधिक परेशानी नहीं होती। गौर साहब का वैदुष्य विराट और गहन है। इस पुस्तक की प्रूफ रीडिंग (अशुद्धि शोधन) करते हुए मैंने संस्कृत लोकोक्ति 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' का परिपालन किया। सचेत और सतर्क रहते हुए सावधानी के साथ जो शब्द जो पंक्ति जैसी जहाँ है उसे वैसे ही और वहीं रखने का प्रयास किया है। इस पुस्तक के प्रथम बार प्रकाशित होने के समय इसका जो कवर, प्रकाशन का पहचान चिन्ह आदि थे, उन्हें भी सहेज दिया ताकि इसका मूल रूप भी बचा रहे।

Random का अर्थ ही है बेतरतीब यानी अलग-अलग समयों में अलग-अलग भाव भूमि में बैठकर या भाव सिंधु में पैठकर लिखी गई कविताएँ हैं। गौर साहब का हृदय सागर सा विशाल और गहन, मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण था। उसमें प्रेम की गंगा और ज्ञान की सरस्वती का अद्वैत था। उनके मातृभूमि के प्रति प्रेम और श्रद्धा की मिसाल यह विश्वविद्यालय है। और वे तमाम कानून जो जनकल्याण के लिए, लोकमंगल के लिए उन्होंने बनाए और बनवाए। इस संग्रह की कविताओं में उनकी उदासी, पीड़ा, प्रेम, मैत्री, आशा-निराशा, उत्साह-प्रेरणा और एकाकीपन के गहरे रंगों को देखा और अनुभव किया जा सकता है।

अन्त में एक करबद्ध प्रार्थना है उस पीढ़ी से जो इस पुस्तक को आज

से 40-50 वर्ष बाद देखेगी, पढ़ेगी। यह संस्करण 40-50 वर्ष तक तो चल सकता है उसके बाद जो पीढ़ी इसे देखे पढ़े वह तत्कालीन प्रशासन से निवेदन कर या स्वयं प्रयास कर (मेरी तरह) इसका नया संस्करण छपवा दे, प्रकाशित करवा दे और जिस तरह मैंने इस संस्करण में मूल पुस्तक के कवर, प्रकाशन का नाम-पहचान चिन्ह सहेजा है, वह भी सहेज दे उस संस्करण में। मैंने जो अगली पीढ़ी से यह प्रार्थना की है, इसे भी सहेज दे ताकि यह सिलसिला चलता रहे और गौर बब्बा, Our grandfather, कुलपिता गौर साहब के नाम के इस विश्वविद्यालय में उनकी भावनाओं और विचार दृष्टि से सम्पन्न-समृद्ध यह साहित्य भी अमरता का पथ तय करता रहे। मैं तब नहीं रहूँगी लेकिन उस प्रकाशनकर्ता के लिए मेरा शुभाशीष और मंगलकामनाएँ बनी रहेंगी।

पाठकों को यह प्रार्थना अजीब सी लगे, यह हो सकता है। लेकिन गौर साहब के साथ जिनका सत्य निष्ठा पूर्ण आत्मीय रिश्ता है, उन्हें यह गम्भीर दायित्व की पूर्ति की तरह ही लगेगा। अपना परिचय फ्लैप पर नहीं देना चाहती थी किन्तु प्रकाशन सामग्री की प्रामाणिकता और संपादक के उत्तरदायित्व की दृष्टि से यह देना आवश्यक लगा।

अनुज्ञा बुक्स दिल्ली के प्रकाशक सुधीर वत्स जी के प्रति जितनी कृतज्ञता व्यक्त करूँ कम है। उन्होंने मेरी इच्छा का मान रखते हुए गौर साहित्य के प्रकाशन की सहर्ष स्वीकृति दी। शुद्ध टंकण के लिए मनोज कुमार जी का परिश्रम सराहनीय है उन्हें हृदय से धन्यवाद देती हूँ। इस कार्य के दौरान प्रो. सुरेश आचार्य का प्रोत्साहन मानसिक संबल बना रहा, उन्हें प्रणाम निवेदन करती हूँ। आशा है पाठक मेरे प्रयास को सकारात्मकता के साथ स्वीकार करेंगे।

18.07.2023

लक्ष्मी पाण्डेय
9753207910

Contents

भूमिका – दायित्वपूर्ति का प्रयास 9

Prefatory Note 15

- To a Lady 17
- Amor Redivivus 19
- By the Cam 29
- Death 30
- A May-Week Memory 31
- On the Tomb of Tamerlane 32
- A Midnight Reverie 34
- The Arab's Tent 36
- Spring Time (From Ovid) 37
- Hadrian's Address to His Soul 38
- Love 39
- Fancy 40
- On the Tomb of Fawcett 41
- The Love Immortal 42
- Winter 44
- She Said Love Never Dies 45
- An Epigram 46
- A Winter Eve 47
- An Eastern Tune 48
- A Night Scene 49
- A Nosegay 50
- The Path of Glory 51

- Mind (Quid Ego sum.) 52
- In a Library 54
- On the Little-Go 55
- Twilight 56
- To A Friend 57
- A Memory 58
- Echoes Through the Woods 59
- India My Land 62
- In Memoriam (To My Sister) 64
- Her Life 65
- Jonquils 66
- Terra Progenuit 68
- Love 69
- Reason and Wisdom (From the Sanskrit) 70
- Sunshine and Shade (A Dream of Realities) 71
- To Saturn (As seen through a telescope) 79
- Death and Nature 80
- Sailing Westward 81
- The Epilogue 88

Prefatory Note

This volume contains all the pieces originally published in the author's "*Stepping Westward and Other Poems*" besides a great deal of new matter now published for the first time in a book form.

A Lawyer's life is too prosaic to inspire poetry, and if the ensuing lines do not evince the feeling noticed by the flattering critics of the "*Stepping Westward*" the author would not feel altogether disappointed.